eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

पाश्चात्त्य दार्शनिकों का भारतीय दर्शन पर दृष्टिकोण

कु0 आँचल[1]
[1]शोधार्थिनी, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

भारतीय दर्शन अपनी प्राचीनता और गुढ़ता तथा अध्यात्मिकता के लिये विश्वदर्शन में विशिष्ट स्थान रखता है। उन्नीसवी पूर्व बीसती शताब्दी में अनेक पाश्चात्य दार्शनिकों और विद्वानों मैं भारतीय दर्शन का गम्भीर अध्ययन किया और अपने विचार प्रस्तुत किये। खासकर जब पाश्चात्य भौतिकवाद से उबकर अध्यात्मिकता की ओर देखने लगा। उन्हें आध्यात्मिकता, आत्मज्ञान हेतु भारतीय विचार 'अहं ब्रम्हास्मि' का समावेश हुआ और एक वैश्विक दर्शन की नींव पड़ी। इस शोध लेख का उद्देश्य पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तक – विशेषतः शोपेनहावर, इलियट, कांट, हेगेल, मैक्समूलर और पॉल ड्यसूसन इत्यादि का भारतीय दर्शन संबंधी दृष्टिकोण का विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना कि भारतीय दर्शन में पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तन को किस प्रकार प्रभावित किया।

मुख्य शब्द– लनात्मक दर्शन, आध्यात्मिकता, अद्वैतवाद, रहस्यवाद, सार्वभौमिक सत्य, नैतिक दर्शन, ज्ञानमीमांसा, सांस्कृतिक संवाद,

Introduction

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम परंपरा है। वेद, उपनिषद्, बौद्ध , जैन, मीमांसा, पुराण, गणित, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, खगोल जैसे विभिन्न दर्शनों में न केवल भारत की बौध्दिक परंपरा का परिचायक ही नहीं ,बल्कि आधुनिक काल में पाश्चात्य चिन्तकों की भी गहराई से प्रभावित किया। औपनिवेशिक काल में जब संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में हुआ, तब पश्चिमी जगत भारतीय दर्शन से परिचित हुआ इसके पश्चात् अनेक पाश्चात्य दार्शनिकों में भारतीय चिंतन को गम्भीरता से ग्रहण किया।

आर्थर शोपेन हावर - शोपेनहावर जर्मनी के बहुत बड़े विद्वान् माने जाते है। और भारतीय दर्शन से सर्वाधिक प्रभावित पाश्चात्य दार्शनिक माने जाते है। उन्होने उपनिषदो का अध्ययन किया और उन्हें 'मानव बुद्धि' की सर्वोत्तम उपलब्धि कहा। शोपेनहावर का इच्छादर्शन (will) उपनिषदों की तृष्णा माया और संसार-दुःख की अवधारणाओं से साम्य रखता है। उनके अनुसार संसार दुःखमय है और मुक्ति का मार्ग 'इच्छा-निरोध में निहित है, जो बौध्द और वेदांतिक विचारों से मेल खाता है। शोपेनहावर ने स्वयं उपनिषदों का सीधे अनुवाद-नहीं किया बल्की सबसे पहले मुगल बादशाह "शाहजहाँ" का पुत्र -दाराशिकोह ने 17वीं शताब्दी के मध्य में 50 उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद '**सिर्र ए-अकबर**' (सबसे बड़ा रहस्य) नाम से किया। तत्पश्चात् फ्रांसीसी यात्री और प्राच्याविद '**डुपेरोन**' की 'सिर्र -ए-अकबर' की एक प्रति मिली और इन्होंने (1801-1802) में इस फारसी अनुवाद का 'लैटिन ' भाषा में अनुवाद किया और इसे औपनेखत (**Oupnekhat)** नाम से प्रकाशित करवाया। तब शोपेनहावर से इसी लैटिन अनुवाद का अध्ययन किया। और इनके मित्र फ्रेडरिक मेजर (Friedrich Majer) ने (1813-1814) में इस अनुवाद से परिचित कराया था। इस प्रकार शोपेनहावर इस लैटिन अनुवाद से बहुत प्रभावित हुये और उन्होंने अपकी मुख्य कृति - **'The World as will and Representation'** में भारतीय दर्शन को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

मुख्य स्त्रोत के रूप में इस्तेमाल किया। उन्होंने उपनिषद्' को अपने जीवन सबसे बड़ा संतोष कहा " **पुरी दुनिया में उपनिषदों के अध्ययन जितना फायदेमन्द और उन्नत करने वाला कोर्ड अध्ययन नहीं है।"**

'अल्बर्ट आइंस्टीन' का भारतीय दर्शन और गणित से गहरा संबंध था उन्होंने भारतीय वैज्ञानिक S.N. बोस' के काम को सराहा जिसमें (**बोस- आइंस्टीन कंडेनसेशन**) जैसी '**क्वाँटम यांत्रिकी**' की नींव पड़ी। और इन्होंने भारत को (गणित, गिनती, शून्य, डेसीबल) सिखाने का श्रेय दिया। इस प्रकार आईंस्टीन में भारतीय गणितज्ञों के योगदान को स्वीकार किया और भारतीय वैज्ञानिकों के साथ मिलकर (**क्वांटम फिजिक्स**) की नींव रखीउनका , काम गणित और दर्शन का अद्भुत मिश्रण है ।

T.S इलियट- भारतीय दर्शन और ज्ञान से बहुत प्रभावित थे। और ये(**हावर्ड युनिवर्सिटी)** में अध्ययन के दौरान संस्कृत, पालि भाषाओं का ज्ञान **चार्ल्स लेमैन** के मार्गदर्शन से प्राप्त किया । इलियट ने स्वीकार किया कि उनकी अपनी कविता भारतीय विचार और संवेदनशीलता का प्रभाव है से English के शोधकर्ता के रूप में इन्हें **1948 (नोवेल प्राइज**) मिला था। इन्होंने भारतीय ज्ञान की प्रशंसा मे लिखा कि "**भारत के महान दार्शनिकों के सामने यूरोपीय दार्शनिक स्कूल के लड़को की तरह दिखते हैं।**" इलियट की प्रसिद्ध कविता (**The Waste Land**) पर भारतीय दर्शन का प्रभाव है। तथा कविता का अन्तिम खण्ड- **(What the Thunder Said),** बृहदारण्यक उपनिषद् के प्रसंग पर आधारित है। और कविता का अन्त संस्कृत मंत्र - **"शान्तिः शान्तिः शान्तिः** को **(Shantih Shantih Shantih)** के साथ वैदिक पुकार से होता है। इलियट का मानना था कि भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की आत्मिक शून्यता और भौतिकवाद से उत्पन्न समस्याओं का समाधान कर सकती है। इस प्रकार T.S. इलियt भारतीय ज्ञान को जीवन के गान सत्य की खोज का एक महत्वपूर्ण साधन मानते थे।

अंकितिल डुपेरोन (Abraham Hyacinthe Anquetil-Duperron).

150 वर्षों के बाद सन 1801 और 1802 में उपनिषदों का दो खंड में लैटिन अनुवाद **(उपनीखत)** को प्रकाशित करवाया। जो गुगल राजकुमार 'दाराशिकोह' द्वारा किये गये फारसी अनुवाद सिर्र -ए-अकबर जो 50 उपनिषदों का फारसी अनुवार था। डुपेरोन ने दाराशिकोह के उपनिषदो के ऊपर प्राप्त फ़ारसी अनुवाद को (25 वर्ष) के मेहनत के बाद लैटिन अनुवाद करवाया। इनके कार्य पश्चिमी दुनिया में उपनिषद्दर्शन को पेश करने वाला पहला प्रयास था। और इसका प्रभाव यूरोपीय दार्शनिकों पर विशेषकर शोपेनहावर पर पड़ा । 'शोपेनहावर' ने इस पुस्तक को 'विश्वसाहित्य का सबसे योग्य काम कहा।

वाल्टेयर - यह फ्रांस के बहुत बड़े दार्शनिक माने जाते थे। यह कहते हैं कि "हमारे जो भी जान है, वह गंगा की ओर से आया है, और 2500 वर्ष पहले 'पाइथागोरस, भारत आकर त्रिकोणमिति 'बौधायन कल्पसूत्र' से इस सिद्धांत को सिखा था ।"**वेद दुनिया का सबसे किमती उपहार है इसलिये दुनिया को भारत का ऋणी रहना चाहिए'।**

वर्नर हाइजेनवर्ग- ये भारतीय दर्शन विशेष रूप से वेदान्त और बौध्द दर्शन के बारे में सकारात्मक द्वाटिकोण रखा था और महसूस किया कि **(क्वांटम फिजिक्स)** के कुछ विचार इन प्राचीन परम्पराओं के समान है। उनका प्रसिध्द कथन है- "**भारतीय दर्शन के साथ बातचीत के बाद, क्वांटम भौतिकी के कुछ विचार जो इतने अजीब (Crazy) लग रहे थे, अचानक बहुत कुछ समझ आने लगे।**" रवीन्द्रनाथ टैगोर से 1929 में मुलाकात किया और चर्चाओं में समझा की क्वांटम भौतिकी में समस्या का समाधान भारतीय दर्शन में था।

इमैनुएल कांट - इमैनुएल कांट (1724-1804) ने भारतीय दर्शन का प्रत्यक्ष अध्ययन किया और **नौमेनन (Noumenon)** की संकल्पना को वेदान्त के **ब्रह्म** ' से जोड़ा। कांट का मत था कि परम सत्य को इन्द्रिय अनुभव से पूर्णतः नहीं जाना जा सकता-यह विचार भारतीय अद्वैत वेदांत के अतिन्द्रिय ब्रह्म सिद्धांत के अत्यंत निकट है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

हेगेल - G.W.F हेगेल का दृष्टिकोण भारतीय दर्शन के प्रति अपेक्षाकृत अलोचनात्मक था। वे भारतीय दर्शन को रहस्यात्मक और इतिहासहीन मानते थे। इसके अनुसार भारतीय चिन्तन में व्यक्ति की स्वतन्त्र चेतना का अभाव है, फिर भी उन्होंने यह मत स्वीकार किया कि उपनिषदों में' ब्रह्म और आत्मा की एकता का सिद्धांत अत्यन्त गहन दार्शनिक विचार है।

मैक्समूलर - यह (1823-1900) में पाश्चात्य विद्वानों में भारतीय दर्शन के प्रमुख संवाहक माने जाते हैं। ये वेदों और उपनिषदों का संपादन एवं अनुवाद कर पश्चिमी जगत को भारतीय दर्शन से परिचित कराया। हांलाकि मैक्समूलर की दृष्टि भारतीयज्ञान के प्रति न्युन थी फिर इन्होंने भारतीय दर्शन को आध्यात्मिक, अनुभूति पर आधारित विश्व दर्शन का अमुल्य धरोहर माना ।

पॉल ड्यूसन - (1845-1919) थे शेपिनहावर से अत्यधिक प्रभावित थे। इन्होंने अद्वैत वेदान्त को एक सार्वभौमिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया और 60 उपनिषदों का जर्मन अनुवाद करवाया। इनके अनुसार-" **ब्रहा और आत्मा की एकता का सिध्दान्त केवल भारतीय दर्शन तक सीमित नही है, बल्की सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शक है।"**

इरविन श्रोडिंगर-नें भारतीय दर्शन (वेदांत) के विचारों का उपयोग करके यह समझाने का किया- जीवन केवल भौतिक और रसायन विज्ञान का परिणाम नहीं, बल्कि एक गहरी एकीकृत
चेतना का हिस्सा है जो वांटम यांत्रिकी और पूर्वी अध्यामिकता के बीच एक सेतु का कार्य करती है। उन्होंने '**what is life'**में भारतीय दर्शन से प्रेरणा लेते हुये जीवन के रहस्य को समझाने प्रयास किया। इन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्प्रशंसा की। उनका मानना था कि 'पश्चिमी विचारकों को भारतीय दर्शन से कुछ विचारों को सावधानीपूर्वक "रक्त आधान" (Blond Transfusion) के रूप में लेना चाहिए ।

इस प्रकार अनेक पाश्चात्य दार्शनिकों का भारतीप दर्शन पर दृष्टिकोण एकरूप नहीं रहा। जहाँ एक तरफ शेपिनहावर, हाइनेनबर्ग, श्रोडिंगर आदि विद्वानों ने भारतीय दर्शन की प्रशंसा की, वही हेगेल, मैकाले इत्यादि जैसे दार्शनिकों में उसकी अलोचना किया। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भारतीय दर्शन पाश्चात्य धार्शनिकों को न केवल प्रभावित किया बल्की विश्व दर्शन को एक व्यापक समन्वित दृष्टि भी प्रदान की ।

उपसंहार- भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन का संवाद वैश्विक दार्शनिक चेतना के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पाश्चात्य दार्शनिको के अध्ययन से सिद्ध होता है कि भारतीय दर्शन केवल धार्मिक या आध्यात्मिक परम्परा नहीं, बल्कि एक सशक्त और तर्कसंगत दार्शनिक प्रणाली है, जिसकी प्रांसगिकता युगों - युगों तक बनी रहेगी ।

<u>संदर्भग्रंथ सूचि-</u>

1. आर्थर शोपेनहावर, द वर्ल्ड एज़ विल एंड आइडिया , 3 खंड अनुवादक: आरबी हाल्डेन और जे. केम्प (लंदन: रूटलेज एंड केगन पॉल, 1883-1886)

2. आर्थर शोपेनहावर, द वर्ल्ड एज़ विल एंड प्रेजेंटेशन , अनुवादक: रिचर्ड ई. एक्विला, डेविड कारस के सहयोग से (न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन, 2008)

3. Christopher Janaway Christopher (University of Southampton) Janaway Schopenhauer: 'the World as Will and Representation': Volume 1 illustrated Edition - 1 January 2014

4. The waste land,T.S.Eliot, New york Boni Liveright 1922.

5. INDIA What can teach us, Friedrich Max Muller,Rupa publication,2002

6. System of The Vedanta, Dr.Paul Deussen,Authorized Translation by Charles johnston, Motilal Banarsidass Delhi .1972.
7. What is Life, Erwin Schrodinger, Cambridge UniversityPress U.K. 1944.
8. The waste land : Eliot, T. S. (Thomas Stearns), 1888-1965
9. The World as Will and Representation - Wikipedia
10. The waste land : Eliot, T. S. (Thomas Stearns), 1888-1965